2. कबीर की मानवतावादी चेतना

पुनीत शर्मा
नेट, एम.ए., बी.एड़,
भिवानी (हरियाणा)

सार :

कबीर के काव्य में मानवतावादी चेतना की समीक्षा करने से पूर्व हमें यह जान लेना आवश्यक है कि मानवतावादी चेतना या मानवतावादी विचारधारा किसे कहते हैं ? 'मानवता' शब्द पशुता का प्रतिवाद है–अर्थात् पशुता जहाँ मिट जाती है, नष्ट हो जाती है, वहाँ से मानवता का उदय होता है। मानवोचित गुणों के कारण ही दया, करूणा, प्रेम, उदारता, ममता, सहनशीलता, सेवा, समर्पण, क्षमा आदि उदात्त गुणों के कारण ही मानव की मानवता सभी के लिए मंगलकारी होती है। अपने इन्हीं गुणों के कारण ही मानव सृष्टि का श्रेष्ठतम प्राणी माना जाता है। कबीरदास जी कहते हैं कि समभाव एवं उदार दृष्टिकोण ही सच्ची मानवता का आधार है। कबीरदास जी मध्ययुग के सर्वाधिक जागरूक संत, समाज द्रष्टा और अप्रतिम मानवतावादी थे।

मुख्य–शब्दः मानवतावाद, प्रेम भावना, लोकचेतना।

कबीरदास जी मनुष्य जन्म को श्रेष्ठतम जन्म स्वीकार करते हुए कहते हैं–

''मानुस जन्म दुर्लभ अहै होइ न दूजो बार।''

कबीरदास कहते हैं कि निश्चय ही मानव जन्म बहुत दुर्लभ है। सच्चे अर्थों में मानव वही है जो सबको समभाव, समदृष्टि से देखे और सबके साथ समान व्यवहार करे। जो धर्म की दृष्टि से या जातिगत भेदभाव न करे। सबको ईश्वर की संतान समझकर उन्हें आदर प्रदान करे।

समभाव एवं उदार दृष्टिकोण ही सच्ची मानवता का आधार है। मानव–मानव के बीच एकता की भावना और सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता एवं आदर का भाव ही 'मानवतावाद' की सही पहचान है। एक सच्चा मानवतावादी व्यक्ति कभी भी धार्मिक, सांस्कृतिक व साम्प्रदायिक, जातिगत आदि किसी भी प्रकार का भेद–भाव नहीं करता।

कबीर के काव्य के अध्ययन से ज्ञात हो जाता है कि कबीर मूलरूप से मानवतावादी संत एवं कवि थे। वे सभी प्राणियों में उस एक परमतत्त्व के दर्शन करते थे। वे सबको उसी दिव्य ज्योति से उत्पन्न समझते थे। कबीरदास जी ने अपनी वाणी से मानव–मानव में एकता स्थापित करने का प्रयास किया।

कबीर किसी संप्रदाय और वर्ग विशेष को लक्षित नहीं करते, उनकी स्वानुभूति व्यापक है, उनके विचार सत्य के निकट हैं। कबीरदास जी ने अपनी वाणी के माध्यम से जहाँ एक ओर समाज में व्याप्त विकृतियों पर आघात किया, वही दूसरी ओर समाज के प्रति, गुरू के प्रति, मानवता के प्रति संदेश भी दिया है।

मानवतावाद के अन्तर्गत प्रेम, सेवाभाव, दया, क्षमा, सहिष्णुता तथा विनम्रता, परोपकार, समता, संतोष, अहिंसा, पावनता, सत्य, इन्द्रिय निग्रह– ये सब आते हैं। कबीर के साहित्य में इन सभी को देखा जा सकता है।

कबीर के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि के साथ–साथ समतावादी दृष्टि भी देखने को मिलती है। कबीरदास जी कहते हैं कि संसार में सभी मनुष्य एक समान हैं, उनमें कोई भी उच्च या निम्न नहीं है। सभी मनुष्यों में एक ही आत्मा का निवास है।

कबीरदास जी समाज में फैले ऊँच–नीच के भेदभाव का विरोध करते हैं। वह कहते हैं कि समाज में समता होनी चाहिए। समता ऐसी होनी

चाहिए, जिस प्रकार जल व मछली की है। जैसे यदि मछली तनिक भी जल से विलग होती है तो शीघ्र ही अपने प्राण त्याग देती है। कबीर कहते हैं–

''पलट ऐसे प्रति करू जल और मीन समान
जहाँ तनिके जल बीछुड़ै छेडि हेतु है प्राण।।''

कबीर के काव्य में प्रेम का सम्बन्ध विशेष रूप से समर्पण भावना और आस्था से है। कबीर ने प्रेम रहित व्यक्ति के जीवन को व्यर्थ और असफल माना है। कबीरदास प्रेमभाव को प्रकट करते हुए कहते हैं कि–

''सौवौ तो सुपने मिलै, जागौ तो मन माहिं।
लोचन राधा सुधि हरी, बिछुरत कबहूँ नाहिं।।''

कबीर जी कहते हैं कि प्रेम भावना के अंतर्गत मनुष्य में आत्मसमर्पण, श्रद्धा, नम्रता, आस्था तथा सदाचार आदि उदात्त भावनाएँ होनी चाहिए। इस संदर्भ में आत्मसमर्पण भाव से कबीर कहते हैं कि–

''लाली मेरे लाल की, जित देखौ तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।''

कबीर ने समाज में व्याप्त अनेक धर्म और धर्म के आधार पर बंटे हुए लोगों तथा उनकी जातियों पर भी व्यंग्य किया है। उनकी दृष्टि में जन्म से कोई व्यक्ति ज्ञानी नहीं कहला सकता है, बल्कि वही व्यक्ति ज्ञानी है, जिसने प्रेम के महत्त्व को स्वीकार कर लिया है। इसीलिए कबीर जी कहते हैं–

''पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ,पण्डित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पण्डित होय।।''

कबीरदास जी के समय में जाति–पाति के आधार पर बहुत भेदभाव किया जाता था। उन्होंने जाति–पाति का घोर विरोध किया और कहा–

''जाति–पाति पूछैं नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई।।''

कबीरदास जी कहते हैं कि सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है। सत्य के आधार पर साधारण मनुष्य भी उच्चता को ग्रहण कर सकता है। इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति झूठ का सहारा लेता है तो उसका शरीर अनेक बुराईयों से युक्त हो जाता है। अतः जो मनुष्य झूठ बोलता है, वह पापी है।

सत्य के महत्त्व को बताते हुए कबीरदास जी कहते हैं कि–

'' सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाकै हृदय सांच है, ताके हृदय आप।।''

कबीरदास ने अपनी भक्ति में सत्संगति पर बल देते हुए सदाचार के आचरण को आवश्यक माना है। सदाचार तभी संभव है, जबकि भक्त आचरण संबंधी सभी सांसारिक विकारों से रहित हो। साथ ही कबीर का यह भी कहना है कि सदाचार को ग्रहण करने के लिए मानव को कुसंगति का त्याग करना चाहिए।

''कबीर संगति साध की, बेगि करीजै जाइ।
दुरमति दूर गँवाइ सो, देखि सुरति बताई।।''

कबीरदास ने यह भी स्वीकार किया है कि सत्संगति कभी निष्फल नहीं जाती। सत्संगति से भक्ति मार्ग की बाधाओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

''कबीर संगत साध की, कदे न निष्फल होई।
चंदन होसी बांवना, नींव न कहसी कोई।।''

कबीरदास जी कहते हैं कि भक्त ईश्वर की कृपा को अपनी दीनता, मूर्खता और अविचार को बतलाकर ही प्राप्त कर सकता है। वह उसकी सेवा करके ही उसके स्नेह और दयालुता का भाजन बन सकता है। कबीर कहते हैं कि–

''लघुता से प्रभुता मिलै, प्रभुता से प्रभु इरि।
चींटी लै शक्कर चली, हाथी के सर धूरि।।''

सर्वहित भावना का विकास ही मानवतावाद की चरम सीमा है। संतों ने अपने साहित्य में दया और सहानुभूति के आदर्श को विशेष महत्व दिया है। दया तत्व ही जगत का सार है। दयाशीलता, संवेदना और सहानुभूति मानवतावादी प्रकृति के स्वस्थ और सुदृढ़ उपकरण हैं।

कबीर के अनुसार शील भी मानवतावाद का एक गुण है। इस संसार में ज्ञानी, ध्यानी, संयमी, दानी, शूरवीर आदि अनेक गुणों से परिपूर्ण व्यक्ति

मिल जायेंगे, परन्तु शीलगुण युक्त एकाध ही पुरूष मिलेगा–

''ज्ञानी ध्यानी संजयी दाता सूर अनेक।
जपिया तपिया बहुत है सीलवंत कोर एक।।''

कबीरदास जी कहते हैं कि हमें संसार के किसी भी जीव को कष्ट नहीं देना चाहिए क्योंकि सभी जीवों में ईश्वर का वास होता है। हमें सभी जीवों पर दया करनी चाहिए तथा सभी लोगों से अमृत के समान मीठे वचन बोलने चाहिए।

कबीर सहिष्णु भाव को मानव का अलंकार मानते हैं क्योंकि ऐसे व्यक्ति को चाहे कितने भी करोड़ों व्यक्ति ऐसे मिले जोकि मानवता गुणों से रहित हों, परन्तु फिर भी वे क्षमाशील, धैर्यवान व विनम्र होते हैं। जैसे चन्दन के वृक्ष पर सर्प लिपटे रहने पर भी वह अपनी शीतलता नहीं छोड़ता, उसी प्रकार सहिष्णु मानव अपने गुणों को नहीं छोड़ता है –

''कबीर चंदन का बीड़ा, बैठ्या आक पलास।
आप सरीखे करि लिए, जे जोते उन पास।।''

कबीर कहते हैं कि यदि चंदन का वृक्ष मदार और ढाक से घिरा हुआ हो तो वह अपनी सुगंध को उसमें संक्रांत कर देता है। जो उसके पास होते हैं, उन सबको अपने समान बना लेता है, उसी प्रकार संतजन के निकट जो संसारी व्यक्ति होते हैं, वे भी उनके साथ से साधु बन जाते हैं।

कबीर के साहित्य में मानवतावाद के इन सभी बिंदुओं को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है क्योंकि चाहे कबीर का समय हो या वर्तमान समय कबीर के दोहे प्रासंगिक प्रतीत होते है। डॉ. रामदरश मिश्र ने कबीर के मानवतावादी विचारों से प्रभावित होकर कहा है,'' वे मानव–धर्म की ऊँचाई के प्रतीक थे।'' उनकी मानवतावादी चिन्तनधारा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी उनके काल में थी। आज भी उनकी वाणी इस कराहती हुई मानवता के लिए सांत्वना का संदेश देती है।

संदर्भ

1. कल्याण, संत वाणी अंक, कबीर, पृ. 211
2. कल्याण, संत वाणी अंक, कबीर, पृ. 212
3. कल्याण, पद 11 संत वाणी
4. डॉ. अरूणा रानी, कल्याण, साखी, कबीर कबीर, पृ. 334
5. डॉ. अरूणा रानी, कबीर वचनावली, पृ. 57
6. कबीर ग्रंथावली, साधु कौ अंग